क्रांति (Revolution)

एदुआर्दो गुडिनास Eduardo Gudynas

प्रमुख शब्द: क्रांति, विकास, ओंटोलोजी (ontology), पूँजीवाद, समाजवाद

वक़्त आ गया है कि जब हम 'विकास' के विचार के पीछे भागने की बजाय अपना रास्ता बदलें। आज हम जिस सामाजिक और पर्यावरणीय संकट की स्थिति में हैं ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है; जिस तरह तेज़ गति से पर्यावरण का विनाश हो रहा है और लोगों की आजीविका छिन रही है ऐसे में यह बहुत ज़रूरी है, और यह तात्कालिक है क्यूँकि इसे अपनाना आज और अभी सम्भव है।

यह ज़रूरी है कि क्रांति का एक नया अर्थ विकास के वैचारिक आधार पर सवाल उठा सके और आधुनिकता (modernity) के परे जा सके। क्रांति का विचार कई अहम राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का उल्लेख करता है।

फ़्रांसीसी क्रांति को जाने-माने उदाहरण के तौर पर लें तो एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था से छुटकारा पाने और राजनैतिक प्रतिनिधित्व के तरीक़ों और संस्थाओं को बदलने और समाज के आर्थिक और सामाजिक ढाँचों को बदलने के लिए क्रांति अपरिहार्य है। हालाँकि अलग-अलग मात्रा और ज़ोर के साथ लेक़िन यह विचार मेक्सिको, रूस, चीन, क्यूबा और अन्य देशों में हुए आमूलचूल बदलावों के लिए इस्तेमाल किया गया था। क्रांति के विचार ने पारम्परिक विकास की प्रथाओं को बढ़ावा देने में भी अहम भूमिका निभाई है, जैसे औद्योगिक, प्रौद्योगिकी, इंटरनेट और उपभोक्ता क्रांति। इन क्रांतियों ने समाज के ढाँचे में अहम बदलाव लाते हुए विकास के मूल विचारों को ही बल दिया।

इनसे ताज़ा घटनाओं ने इस विचार को कुछ उलझा दिया है। कुछ इलाक़ों में आज भी महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन क्रांति की पारम्परिक धारणाओं को बचाने में लगे हुए हैं मसलन पूँजीवाद को छोड़कर समाजवाद की ओर जाने के लिए। केंद्रीय और पूर्वी यूरोप में, 'असली समाजवाद' (Real Socialism) को छोड़ना एक क्रांति की तरह पेश किया गया, हालाँकि विपरीत दिशा में यानी बाज़ार-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर। इसके विपरीत, समाजवादी क्रांति के प्रयासों, जैसे चीन और वियतनाम में ऐसा विमर्श (discourse) चलाया गया लेक़िन असल में उनकी विकास की रणनीतियाँ पूँजीवाद के पक्ष में हैं। और जहाँ विकास के यूरो-केंद्रित होने पर हमला करते हुए इस्लामिक क्रांतियाँ हुईं वे आर्थिक वृद्धि का समर्थन करती हैं।

२१वीं सदी की शुरुआत से, लैटिन अमेरिका ने एक 'लेफ़्ट टर्न' लिया है और यहाँ कई सरकारों ने अपने-आप को क्रांतिकारी क़रार दिया है जैसे- वेनेज़ुएला, बोलिविया, इक्वाडोर और निकारागुआ। लेकिन इन देशों ने नव-विकासवादी व्यवस्थाओं को अपनाया है जिन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुँध दोहन से आर्थिक वृद्धि प्राप्त करने की ओर क़दम बढ़ाए हैं।

इस तरह, हम ऐसी कई घटनाओं से घिरे हुए हैं जिन्हें क्रांतिकारी कहा गया (विशेषत: राजनीतिक मायनों में) लेक़िन जिनका समाज के सांस्कृतिक आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों पर भी प्रभाव पड़ा। हालाँकि इन सभी मामलों में 'विकास' के बुनियादी हिस्से बचे रहे जैसे आर्थिक वृद्धि, उपभोक्तावाद, प्रकृति का दोहन, प्रौद्योगिकी में आधुनिकता और कमज़ोर लोकतंत्र। यह काफ़ी विरोधाभासी स्थिति है जहाँ रूस और चीन की क्लासिक क्रांतियाँ हों या हालिया क्रांतियाँ जैसे दक्षिणी अमेरिका में २१वीं सदी के समाजवाद वाली क्रांतियाँ, चाहे धार्मिक हों या पंथ-निरपेक्ष, सभी अंतत: 'विकास' के विचार की तरफ़ मुड़ी हैं।

इनमें से कुछ क्रांतियों ने राजनैतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक समानता के सम्बंध में सकारात्मक परिणाम दिखाए लेक़िन वे राज्य-सत्ता हासिल करने के लिए ज़रूरी सहायक लक्ष्यों में ही उलझ कर रह गए (विशेषत: लेनिन-वादी, ट्रोत्सकी-वादी और माओ-वादी)। वे सभी विकास के विकल्पों को बढ़ावा देने में विफल रहे।

इसे इस बात से समझाया जा सकता है कि सभी आधुनिक राजनैतिक परम्पराओं की पृष्ठ-भूमि एक ही रही है। वस्तुत: क्रांति का विचार आधुनिकता की अन्य श्रेणियों के साथ ही परिपक्व हुआ जैसे राज्य, अधिकार, लोकतंत्र, प्रगति और विकास।

विकासवाद के जारी रहने ने कई ऐक्टिविस्ट और अकादमिक लोगों का क्रांतिकारी प्रयासों से विश्वास उठा दिया है, और वे यह तर्क देने लगे हैं कि क्रांति का यह विचार वर्तमान परिस्थितियों में लागू नहीं होता और इसके बजाय स्थानीय प्रयासों पर ध्यान देना चाहिए।

लेक़िन यह स्थिति एक अहम बाधा पैदा करती है, विकास के किसी रैडिकल विकल्प का मतलब है कुछ क्रांतिकारी बदलाव। जब विकास के सभी वर्तमान प्रकार टिकाऊ नहीं हैं तो ऐसे में किसी रैडिकल विकल्प को आधुनिकता के अपने साझा आधारों पर सवाल उठाने ही होंगे। ऐसे किसी रैडिकल प्रयास के लिए क्रांतिकारी भावना और काम की ज़रूरत है।

मसलन आधुनिक अर्थ में क्रांति का मतलब किसी राज्य की सरकार बदलना या एक प्रकार के विकास की बजाय दूसरे प्रकार का विकास लाना हो सकता है। ऐसे में यह ज़रूरी हो जाता है कि क्रांति के विचार का एक नया अर्थ बनाया जाए जो आधुनिकता से परे जाने और इसकी ओंटोलोजी के एक विकल्प की कल्पना कर सके।

क्रांति के इस सिद्धांत के अनुसार आधुनिकता के बनिस्बत एक विद्रोह करना होगा जो इसकी सीमाओं पर प्रकाश भी डाले और इसके विकल्प भी खोजे। इसके लिए ज़रूरत है एक नवप्रवर्तन की कल्पना की जिससे इसकी तार्किकता और संवेदनाओं को उकेरा जा सके और इसकी तैयारी की जा सके। साथ ही एक विस्तारित राजनीति की भी जिसमें कई सामाजिक क्षेत्र, प्रथाएँ और तजुर्बे शामिल हों।

क्रांति की यह समझ 'Pachacuti' के ऐंडीयन विचार से काफ़ी समानता रखती है। 'Pachacuti' से तात्पर्य मौजूदा ब्रह्मांडीय व्यवस्था को भंग कर अव्यवस्था की स्थिति क़ायम करना है जिससे एक नई ब्रह्मांडीय दृष्टि उभर सके। इस तरह, Pachacuti के अनुसार एक क्रांति आधुनिकता को तबाह करने की कोशिश नहीं करती बल्कि इसके ढाँचों के विघटन और अव्यवस्था को जगह देने की कोशिश करती है और साथ ही वैकल्पिक समझ और परिणाम भी पैदा करती है। इसमें एक महत्वपूर्ण नव-निर्माण भी शामिल है।

इस प्रकार की क्रांति के कई पद-चिन्ह हमें इतिहास में मिलते हैं। अव्यवस्था और नव-निर्माण का यह अनुभव तार्किक विचारों जैसे सामाजिक और पर्यावरणीय संकट के प्रमाणों और साथ ही उत्तेजक, कलात्मक, आध्यात्मिक और जादुई अनुभवों से भी पोषित होता है। ऐसी क्रांति एकल-संस्कृति को नहीं बल्कि अभिव्यक्ति की विविधता को बढ़ावा देती है, यह सामूहिक होती है और इसके लिए व्यक्तिगत बदलाव भी ज़रूरी होता है। विशेषत: जीवन के मोल को वापस लाने के लिए --- महात्मा गांधी, इवान इलिच, zapatismo, buen vivir इत्यादि इसके कुछ मॉडल प्रदान करते हैं।

क्रांति इस अर्थ में उपयोगिता-वादी मूल्यों से अलग हटकर किसी को तोलने के कई पैमाने वापस लाने की जगह बनाती है - जैसे सौंदर्यपरक, धार्मिक या पारिस्थितिकीय और साथ ही ग़ैर-मानव दुनिया के 'निहित मूल्य' को भी स्वीकारती है। चूँकि विकास एक प्रदर्शनात्मक रचना (performative construct) है जिसे हम सभी के द्वारा रोज़मर्रा की प्रथाओं से बनाया और फिर बनाया जाता है यह क्रांति उस प्रदर्शनात्मकता को रोकती है। जैसे यह समाज और प्रकृति के वस्तु-करण (commodification)को रोकती है। इस तरह आधुनिकता की यह विशेषतायें अव्यवस्थित हो जाती हैं और एक अपरिहार्य और कभी-कभी असहज परिणाम की ओर ले जाती हैं यानी: एक ऐसी क्रांति जो पूँजीवाद और समाजवाद दोनों से ही भिन्न होती है।

इस क्रांति की झलक दिखाती प्रथाएँ संयुक्त-क्रियाओं (synergy) के साथ आपस में जुड़ी होती हैं, और पूरे समाज में फैलते हुए, अपने कामों, प्रभावों और राजनीति की अन्य शैलियों में ठोस होती रहती हैं, विशेषत: गरिमा और स्वायत्तता से उपजे विद्रोह से। यह एक ऐसी क्रांति होती है जो ग़ैर-मानवीय यानी पशु और अन्य सजीव प्राणियों के सहयोग से बनती है। यह समाज के अर्थ को पुनर्परिभाषित करती है। एक 'पशु सर्वहारा' (animal proletariat) की सम्भावना को ही लें।

इस प्रकार की क्रांति समाज और कुदरत के बीच के द्वंद्व को अव्यवस्थित कर देती है और ऐसी संबंधात्मक जीवन-दृष्टियों का निर्माण होने देती है जो समाज को कुदरत और कुदरत में समाज को पुनर्स्थापित (re-embed) करती हैं। यह ग़ैर-मानव जगत को भी 'subject' यानी चेतना-युक्त प्राणी का दर्जा देती है। संक्षेप में, एक ओर जहाँ आधुनिकता अपने-आप को एक

सार्वभौमिक और आत्म-सम्पूर्ण क्षेत्र की तरह दिखाती है वहीं यह अपनी सीमाओं को छुपा लेती है और इसके विकल्पों को खोजने के प्रयासों को ख़त्म कर देती है। यह क्रांति आधुनिकता की सीमाओं को अव्यवस्थित कर उसका पर्दाफ़ाश करते हुए इसे दूसरी ontologies के लिए खोलती है। इस तरह क्रांतिकारी काम का मतलब नई ontological openings की सम्भावनाओं के लिए ज़मीन तैयार करना है।

अन्य संसाधन :

Holloway, John (2003), Change the World without Taking Power: The Meaning of Revolution Today. London: Pluto Press.

Williams, Raymond (1983), 'Revolution', in Raymond Williams (ed.), Keywords. New York: Oxford University Press.

लेखक परिचय:

एदुआर्दो गुडनयस उरुग्वे के Latin American Center for Social Ecology (CLAES), Montevideo में वरिष्ठ शोधकर्ता हैं। कैलिफ़र्न्या विश्वविद्यालय (Davis) के मानवशास्त्र विभाग में एसोसिएट शोधार्थी हैं और दक्षिणी अमेरिका के कई ज़मीनी जन-संगठनों के सलाहकार भी हैं।